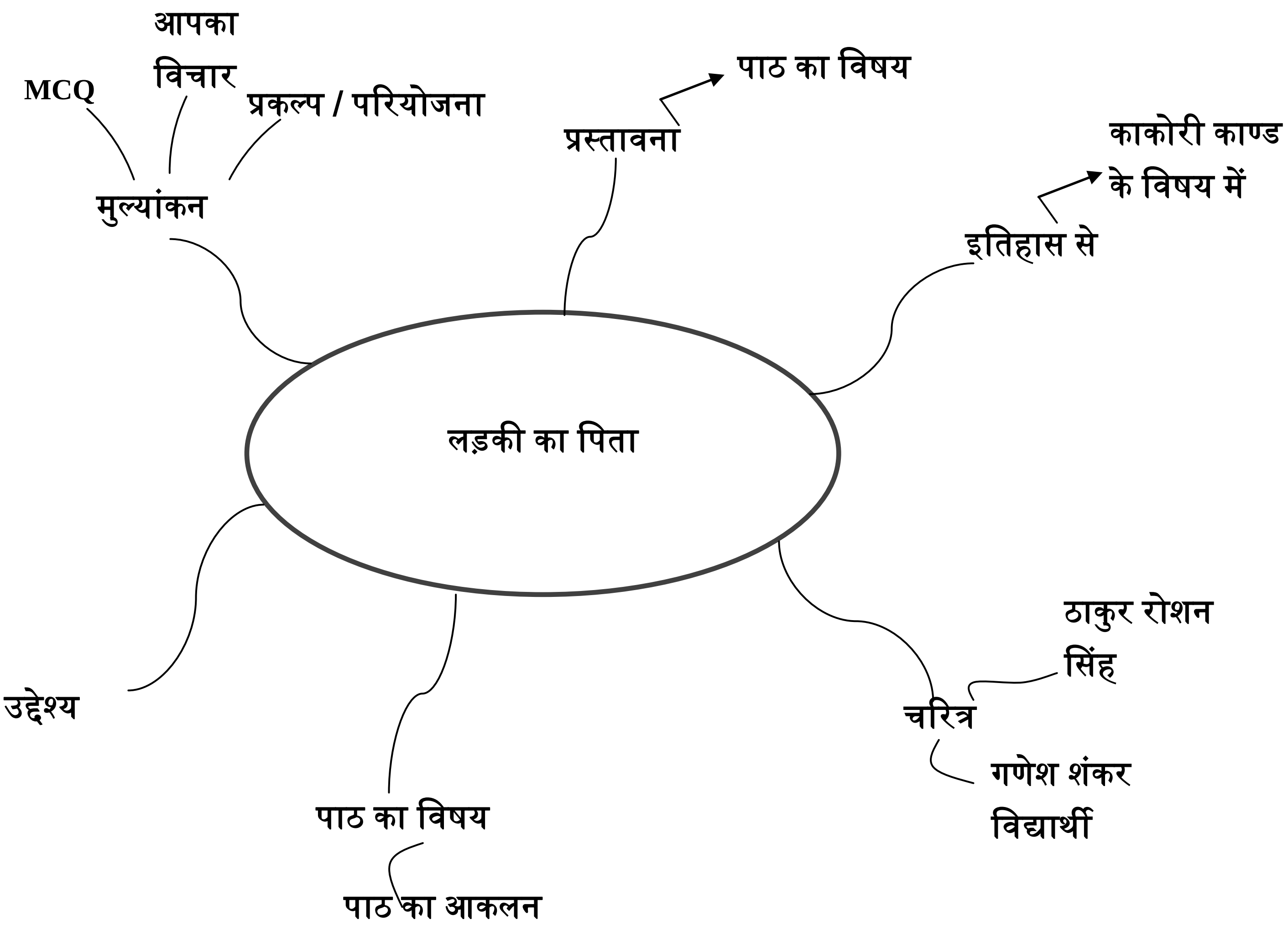
लड़की का पिता
प्रस्तावना
पाठ का विषय
इतिहास से
काकोरी काण्ड के विषय में
चरित्र
ठाकुर रोशन सिंह
गणेश शंकर विद्यार्थी
पाठ का विषय
पाठ का आकलन
उद्देश्य
मुल्यांकन
MCQ
आपका विचार
प्रकल्प / परियोजना

१.५ लड़की का पिता

रचनाकार : श्रीराम शर्मा

Template - 1

प्रस्तावना

बच्चो आज हमें स्वतंत्र हुए   67 साल बीत गए हैं। यह निर्विवाद है कि आज खुली हवा में हम साँस ले सकते हैं वह हमारे क्रांतिकारी तथा स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान तथा त्याग के कारण ही ।

पर बच्चों क्या आपने कभी सोचा है कि ये क्रांतिकारी भी किसी के पिता, बेटे, भाई और पति होंगे, सोचे तो इनकी मृत्यु के बाद इनके परिवारवालों का क्या हाल हुआ होगा ।

जैसे भगतसिंह ने अपने शादी से पहले घर छोड दिया और घरवालों के नाम एक चिठ्ठी लिखी जिसमें लिखा था कि आजादी ही उनकी दुल्हन है।. इन सभी क्रांतिकारियों के अपनों ने भी इस काल में काफी दिक्कते सहीं। लोग उन्हें सिर्फ सहानुभूति ही दिखाते थे क्योंकि इन लोगों की मदद करने का अर्थ था 'राजद्रोह' ।

आज जो घटना हम पढने वाले हैं वह, इसी विषय पर है – एक संवेदनाशील कहानी जो काकोरी काण्ड में फाँसी की सज़ा प्राप्त महान क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह के परिवार के दैन्यावस्था का वर्णन करती है ।

इस संवेदनाहीन समाज में जो त्याग को भी सम्मान नहीं देता उस समाज में एक विधवा औरत का अपनी पुत्री के साथ सम्मानपूर्वक जीना दुभर है । ऐसी स्थिति में माँ-बेटी की मदद करने गणेश शंकर विद्यार्थी आ पहुँचे ।

बच्चों पाठ शुरु करने से पूर्व हम काकोरी काण्ड और ठाकुर रोशन सिंह के बारे में जान लेते हैं –

Template – 2

काकोरी काण्ड

काकोरी काण्ड ९ अगस्त १९२५ के दिन हुआ। इस काण्ड के पीछे कुछ उद्देश्य थे।

रामप्रसाद बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला ने इस घटना का नियोजन किया था। यह डकैती नहीं अपित्तु एक विद्रोह जिसके पीछे मुख्य रूप से तीन कारण थे –

१) ये सब क्रांतिकारी हिन्दुस्थान रिपब्लिक असोशियन के लिए काम करते थे – इसका प्रमुख उद्देश्य संघटन के लिए पैसा प्राप्त करना था ताकि वे ब्रिटिशों के विरोध में काम कर सकें।
२) दुसरा कारण था संघटना का साकारात्मक रूप जनता के सामने लाना अर्थात जनता को अपने कामों के विषय में विश्वास दिलाना।
३) ब्रिटिश सरकार को झकझोरकर रख देना।

इस योजना के अंतर्गत रेल से जानेवाला सरकारी खजाना लखनऊ के पास काकोरी और अलमनगर के बीच लूटा गया तथा इन पैसों से क्रांति के लिए आवश्यक समाना अर्थात बारुद, बंदूकें आदि खरीदीं गईं।

वैसे तो ठाकुरजी काकोरी काण्ड में साक्षात् नहीं थे फिर भी उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई थी।

Template – 4

ठाकुर

ठाकुर रोशन सिंह का १९ दिसंबर १९२७ को इलाहबाद के नैनी जेल में फांसी पर लटका दिया।

ठाकुर रोशन सिंह का काकोरी काण्ड से कोई संबंध नहीं था। उन्हीं के उम्र के केशव चक्रवर्ती जो इस डकैती में थे, उनकी जगह ठाकुर रोशन सिंह को पकडा गया। चूँकि रोशन सिंह बमरौली के डकैती में शामिल थे इसलिए ब्रिटिश सरकार ने सारी शक्ति ठाकुर सिंह को फाँसी दिलवाने में लगा दी, केशव चक्रवर्ती को खोजने का प्रयास भी नहीं किया।

ठाकुर रोशन सिंह अपनी फाँसी से जरा भी विचलित नहीं हुए। इसी दौरन उन्होंने अपने मित्र को पत्र लिखा जिसके अंत में उन्होंने जो शेर लिखा है वह उनकी मनोदशा का वर्णन करता है –

जिंदगी जिंदा-दिली को जान ऐ रोशन
वरना कितने ही यहां रोज फना होते हैं।

ऐसे स्वाभिमानी क्रांतिकारी के परिवार की दुखभरी कहानी आज हम पढने वाले है।

यह पाठ हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम किस मिट्टी के बने हैं जो ऐसी बात को लेकर **संवेदनशील** नहीं है।.

साथ ही यह कहानी हमारे सामने गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे स्वतंत्रता सैनानी का चरित्र भी लाती है जो अपने मूल्यों के लिए समाज के विरोध में जाकर काम करने की क्षमता रखते हैं।

लेखक श्रीराम शर्मा जी का सशक्त लेखनी से रचित 'लड़की का पिता' यह कहानी हमें अवश्य **अंतर्मुख** कर देगीं।.

Template – 5

कहानी शुरु होती है जब ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी हो चुकी है। तथा उनके पीछे उनकी विधवा पत्नी और शादी योग्य लडकी है।.

यह कहानी उस जमाने की है जब देशप्रेम को देशद्रोह माना गया । ठाकुर जी की बेटी के विवाह की बात लेकर उनकी विधवा बहुत परेशान है – वह इसी उधेडबुन में हैं कि यह विवाह कैसे होगा ।

एक तो शादी के लिए जरुरी पैसों का इंतजाम कैसे होगा दूसरे बेटी से शादी कौन करेगा ।

जो भी शादी के लिए तैयार होता पुलिस उन्हें धमकाया करती थी ।

रोशन सिंह की पत्नी की उलझन इतनी बढ गई कि उन्होंने अपनी बेटी के साथ आत्महत्या करने की भी सोची ।

कहते हैं जाने वाले तो चलें जाते हैं और पीछे जो सह जाते हैं उनके लिए जिंदगी पहाड जैसे बन जाती है । ऐसी स्थिति में उन माँ-बेटी की मदद करने पहुँचते हैं एक सज्जन जो बात की गहराई को जान जाते हैं तथा अपने एक सहकारी द्वारा परिस्थिति समझ लेते हैं ।

यह दयनीय परिस्थिति मूलतः दो कारणों से थी

जो भी लड़का शादी के लिए तैयार होता था, उस इलाके का पुलिस दरोगा उसे धमकाता था।

कारण

विवाह के लिए पर्याप्त पैसे न होना

इस परिस्थिति से वे सज्जन मार्ग निकालते हैं -:

फर्रूखाबाद में होनेवाली सभा का सभापतित्व नहीं करते

उपाय

पैसों का प्रबंध स्वयं करने की बात करते हैं

अपने सहकारी के साथ २ मील चलकर थाने पहुँचते हैं – दरोगा को समझाते हैं ।

परिणामस्वरूप दरोगा को अपनी गलती का एहसास हो जाता है तथा वह विवाह का खर्च भी उठाने के लिए तैयार हो जाता है ।

सज्जन व्यक्ति लड़की का पिता बन कन्यादान करते हैं। यह सज्जन व्यक्ति थे –

गणेश शंकर विद्यार्थी

Template – 6

जिस प्रकार पिता अपनी बेटी का संरक्षक होता है, उसपर आया हर संकट को दूर करता है, उसी प्रकार यहाँ गणेश शंकर विद्यार्थी ने लड़की का पिता बन काम किया।

Template – 7

इस पाठ का उद्देश्य गणेश शंकर विद्यार्थी तथा ठाकुर रोशन सिंह जैसे महान तथा निस्वार्थी देशभक्तों हमारा परिचय हो।

बच्चों इन्हीं महान लोगों के त्याग के परिणामस्वरूप आज आजादी की साँस ले पा रहे है। उनके प्रति कृतज्ञ होना हमारा कर्तव्य है। पर क्या वाकई हम उनके त्याग का सम्मान कर रहे हैं, आज के देश की स्थिती देखकर क्या कभी आपको ऐसा नहीं लगता कि हम उस त्याग का सम्मान नहीं कर रहे हैं। हुतात्मा / शहीदों की विधवाओं का हक पारतंत्र्य में छीना जाता था .... पर आज की क्या स्थिति है ?

आज हम आजाद हैं पर आज भी हमारे सैनिकों की विधवाओं का हक छीना जा रहा है। क्या इन विधवाओं की मदद करने अब कोई भी 'गणेश शंकर विद्यार्थी' नहीं आऐंगे ?

बच्चों उसं जमाने में भी हमारी सबसे बडी हानि हमारे 'डर' तथा 'अन्याय सहन' करने की आदत ने की है। ठाकुर रोशन सिंह के प्रति लोगों के मन में आदर नहीं था यह बात नहीं थी, वै 'डर' गए थे। अन्याय का विरोध नहीं कर पा रहे थे।.

बच्चों, जहाँ हम रहते हैं, जो हमारी जन्मभूमि होती है उसे हम ही रहने योग्य बनाते हैं।
यह पाठ हमें अपने मूल्यों के प्रति एकनिष्ठ होने की शिक्षा देता है।
फिर चाहे वे ठाकुर रोशन सिंह हो या गणेश शंकर विद्यार्थी ये तत्वनिष्ठ और मूल्य निष्ठ थे जिन्होंने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई , ये दोनों ही हमारे लिए वन्दनीय है।

मूल्यांकन

१) ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी क्यों हुई थी ?

१) उन्होंने खून किया था।
२) उन्होंने बाम्बस्फोट किया था।
३) उन्होंने चोरी की थी।
४) काकोडी काण्ड के अंतर्गत

२) क्रांतिकारी की लड़की से विवाह करना मतलब –

- अच्छा काम
- बुरा काम
- राजद्रोह
- गुन्हा

३) लड़की के पिता का स्थान किसने लिया ?

- भगत सिंह
- गांधीजी
- गणेश शंकर विद्यार्थी
- जवाहरलाल नेहरू

४) शादी के लिए तैयार लड़कों को कौन धमकाता था ?

- क्रांतिकारी
- गाँववाले
- ब्रिटिश
- पुलिस दरोगा

५) आपके विचार से इस पाठ का नाम 'लड़की का पिता' यह क्यों रखा होगा ?

६) प्रस्तुत पाठ में गाँववालों के विचारों सें तथा उनके बतीव से क्या आप सहमत हैं ? क्यों ?

७) गणेश शंकर विद्यार्थीजी ने क्या किया ?

८) संवाद लिखें – मान लीजिए क्रांतिकारियों में से कोई अगर वर्तमान भारत की स्थिति देखें तो वे किस प्रकार अपने विचार प्रकट करेंगे ?

प्रकल्प / परियोजना

ऐसे क्रांतिकारियों के बारे जानकारी प्राप्त करें जिनके बारे में इतिहास चुप है. जैसे रामप्रसाद बिस्मिल, बाबू गेनू तथा अपनी कक्षा के भित्ति फलकों पर लगाएँ ।

'राष्ट्रपुत्र' शहीद भगत सिंह ने फांसी से एक दिन पहले 22 मार्च 1931 को अपने साथियों के नाम अंतिम पत्र लिखा था। यह पत्र लाहौर से प्रकाशित अंग्रेजी 'द ट्रिब्यून' में छपा था। इस पत्र में लिखे एक-एक शब्द उनकी बहादुरी और देशप्रेम को दर्शाता है। आइए पढ़ते हैं हूबहू उनकी आखिरी चिट्ठी-

अगर स्वतंत्र जिंदा रह सकता तब इन्हें करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता।

इसके सिवाय

क) माँ ने राघव से कहा ---------- “तुम बाज़ार जाओ”।

अ) की

आ) कि

इ) के

ई) का

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी का जन्म तीर्थ राज प्रयाग (इल्ल्हाबाद) मे २६ अक्टूबर १८९० इसवी को हुआ था | उनके पिता श्री जयनारायण एक सुशिक्षित , उत्तम विचारो से ओत्त- पोत्त राष्ट्र भक्त एवम परोपकारी थे | गणेश शंकर विद्यार्थी अपनी लेखनी के कारण जाने जाते थे। कुछ समय बाद उन्होंने स्वयं का अपना साप्ताहिक पत्र निकला जिसकी आर्थिक सहायता सामाजिक कार्यकर्ता श्री काशी प्रकाश ने की और पत्र का नाम रखा "प्रताप "| यही "प्रताप" जिसने भारतीय जन - मानस मे राष्ट्र की आज़ादी हेतु कृत संकल्प रह कर लडने , गोरी सरकार के काले कारनामे को उजागर करने में , जनता के समक्ष प्रकट करने में, अमीरों और जमींदारों के अत्याचारों का पर्दा फाश करने , थानेदारों द्वारा अनपढ़ एवम् भोली जनता पर अत्याचार किये जा रहे जुल्मों का भांडा फोड़ करने ,गरीबो किसानों और मजदूरों के घर में पहुँच कर उनके भीतर स्वतंत्रता के सपना जगाने में अमूल्य ,अतुलनीय व वन्दनीय सहयोग दिया |

१९३१ को कानपूर में फैले एक दंगे को रोकने के लिए वे उसमें कूद गए अपने इस कृत्य उन्होंने अनेक मासूमों 8की जान बचाई पर उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ा उन्हें 8बहुत बेरहमी से मारा गया | भारत के इतिहास मे सम्प्रदायिकता को मिटाने के लिये हिन्दू मुसलमानों में प्रेम और प्यार बनाये रखने के लिए आप को इसे बड़े बलिदान का उदहारण और कहीं नहीं मिलेगा।